BA 1st Semester Hindi Literature Notes PDF

इकाई 1: भारतीय ज्ञान परंपरा का साहित्यिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय ज्ञान परंपरा का साहित्यिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी प्राचीन और समृद्ध ज्ञान परंपरा है, जो हजारों वर्षों से निरंतर विकसित होती रही है। ज्ञान परंपरा का अर्थ है वह मूल्य, विचार, विमर्श और शास्त्रीय संपदा, जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित किया गया है तथा जिसने भारत समाज, संस्कृति, धर्म, विज्ञान, साहित्य, कला आदि सारे क्षेत्रों को सजग और समृद्ध बनाया। भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें वैदिक काल में हैं, जहाँ वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, अरण्यक, स्मृति, पुराण जैसे ग्रंथों ने बौद्धिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को विस्तार दिया। यह परंपरा न केवल सैद्धांतिक ज्ञान बल्कि लोकजीवन की समस्याओं और समाधान के लिए भी व्यावहारिक मार्गदर्शन देती है। जीवन को सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् के भाव से देखना, धर्म-कर्म, कर्मफल, पुनर्जन्म, आत्मा-परमात्मा संबंध के गूढ़ रहस्य, और प्रकृति के साथ संबंध जैसी अवधारणाएँ भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता रही हैं।

ज्ञान की परंपरा का महानतम योगदान समाज में संतुलन, सहिष्णुता, सामूहिकता और विमर्श की संस्कृति विकसित करना भी है। 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात विद्या वही जो मुक्त करे, इस धारणा ने शिक्षा का उद्देश्य केवल उपार्जन या आजीविका न मानकर, मनुष्य के समग्र विकास और सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक माना। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली, गुरु-शिष्य परंपरा, वाचिक संस्कृति ने विषय-वस्तु के आदान-प्रदान को सुसंगठित किया। परंपरा में ज्ञान का संरक्षण सिर्फ ग्रंथों में नहीं, बल्कि नाट्य, कथा, कला, कविता, शिल्प, वास्तुकला, शास्त्र, तर्क, चिकित्सा आदि के रूप में हुआ। साहित्य का जन्म इसी बहुआयामी ज्ञान परंपरा की गोद में हुआ, जो एक ओर भौतिक जीवन के यथार्थ को रूपायित करता है तो दूसरी ओर आत्मा के दिव्य स्वरूप की खोज, मनुष्य और समाज के परस्पर संबंध को दिशा देता है।

File Provided by GKPAD.COM

भारतीय ज्ञान परंपरा और हिन्दी साहित्य

हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का जीवंत प्रमाण है। इसका उद्भव संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश और लोक भाषाओं से संयुक्त होकर हुआ है। हिन्दी साहित्य ने जीवन के विविध पक्षों, जैसे धर्म, दर्शन, लोक-जीवन, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक घटनाओं को रूपायित किया है। ज्ञान परंपरा में साहित्य को केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं, बल्कि मनुष्य के विचार, संवेदना और इतिहास को अभिव्यक्त करने का माध्यम माना गया। साहित्य का उद्देश्य समाज को नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्तर पर उन्नत बनाना रहा है।

हिन्दी साहित्य का आधार भारतीय चिंतन में निहित आदर्श, मूल्य, भक्ति, नीति, तर्क, भावना, करुणा आदि विविध पक्ष हैं। यह साहित्य वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, पंचतंत्र, नीति शास्त्र, लोक कथा, गीत, सूक्ति और श्लोक की धाराओं से संबद्ध है। प्रारंभ में संस्कृत-निर्मित अपने स्वरूप में यह साहित्य अत्यंत गूढ़ तथा दार्शनिक था, किंतु समाज की बदलती आवश्यकताओं को देखते हुए यह लोकरंजन एवं लोक-कल्याण की ओर उन्मुख हुआ। बौद्ध और जैन धर्मों के समग्र प्रभाव ने साहित्य को अधिक लोकानुकूल एवं सर्वसामान्य बनाया। यही क्रम मुसलिम शासन के आगमन, मिश्रित संस्कृति, और विभिन्न संप्रदायों, भाव गोत्रों, आंदोलन और आंदोलनों के रास्ते होते हुए आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माण की बुनियादी प्रक्रिया में बदल गया।

हिन्दी साहित्य की समृद्ध परंपरा में आदिकाल का वीरगाथा काव्य, भक्तिकाल का परिवर्तनकारी भाव, रीतिकाल का श्रृंगार रस, आधुनिक काल का नवजागरण, समाजवाद, प्रयोगवाद, और समकालीन चिंतन स्पष्ट दिखता है। इस यात्रा में भाषा, शिल्प, भाव, विषय, शैली सभी का विकास हुआ है। सामाजिक चेतना से लेकर व्यक्तिगत संवेदना तक की अभिव्यक्ति, विचारधारा का विस्तार, काव्य और गद्य की विविधता, साहित्य और संस्कृति का आपसी गहन संबंध इस साहित्य की विशेषता है। इसकी विविध शाखाओं ने भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म, राजनीति सभी को गहरे रूप से प्रभावित किया है।

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन, नामकरण व साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

File Provided by GKPAD.COM

हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक काल विभाजन साहित्य के विकासक्रम, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिस्थितियों के आधार पर किया गया है। प्रत्येक काल की प्रवृत्तियाँ, नामकरण और साहित्य की दिशा उस समय की परिस्थितियों से निर्धारित होती हैं।

1. आदिकाल (वीरगाथा काल)

आदिकाल को वीरगाथा काल भी कहा जाता है, जो हिंदी साहित्य का प्रारंभिक दौर है। समय की अवधि 10वीं-14वीं शताब्दी मानी जाती है। इस काल में काव्य का मुख्य उद्देश्य वीर रस, राष्ट्र की रक्षा, स्वाभिमान, उत्साह, और शौर्य प्रदर्शन था। प्रमुख रचनाएँ- पृथ्वीराज रासो (चंदबरदाई), हम्मीर रासो, परमार रासो, आदि। इन रचनाओं की भाषा मिश्रित अपभ्रंश और प्रारंभिक हिंदी स्वरूप में रही।

2. भक्तिकाल

भक्तिकाल 14वीं से 17वीं शताब्दी की अवधि में आता है। समाज में राजनीतिक अस्थिरता, धार्मिक असहिष्णुता, जातिवाद एवं रूढ़िवादिता के विरोध में संत कवियों ने भक्ति की मुख्य धारा को समाज में प्रवाहित किया। इस काल के दो प्रमुख संप्रदाय हैं:- सगुण (राम, कृष्ण) तथा निर्गुण (निराकार ब्रह्म)। प्रेम, साम्य, करुणा, आडंबर विरोध, मनुष्यता के संदेश के साथ इस काल की प्रवृत्तियाँ लोकप्रिय हुईं। उल्लेखनीय कवि- कबीर, सूरदास, तुलसी, मीरा, रैदास आदि।

3. रीतिकाल

रीतिकाल 17वीं से 19वीं शताब्दी तक फैला है। मुगल शासन, दरबारी संस्कृति, विलासिता, रूप-सौंदर्य, शृंगार की प्रधानता। भाषा ब्रज रही, काव्यशास्त्र का अनुकरण और रूढ़ छवि। रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीति मुक्त उपप्रवाह। केशव, बिहारी, घनानंद प्रमुख कवि।

4. आधुनिक काल

आधुनिक काल 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में शुरू होकर आज तक चलता है। प्रथम स्वाधीनता संग्राम, नवजागरण, समाज सुधार, राष्ट्रीय चेतना, यथार्थवाद, प्रयोगवाद, जन आंदोलनों के प्रभाव। भाषा खड़ी बोली हिंदुस्तानी, शैली गद्य-पद्य दोनों में। भारतेन्दु, द्विवेदी,

File Provided by GKPAD.COM

प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी आदि साहित्यकार। प्रवृत्तियाँ: नवजागरण, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, नई कविता, समकालीन कविता।

नामकरण व प्रवृत्तियाँ

नामकरण काल, समाज, विधा, शिल्प, भाव और प्रमुख रचनाकारों/रचनाओं के आधार पर हुआ है। हर काल की प्रवृत्तियाँ उस दौर की सामाजिक आवश्यकता, धार्मिक धारणा, विचारधारा, भाषा, शैली से जुड़ी रही हैं। जैसे आदिकाल में शौर्य और संरक्षण, भक्तिकाल में भक्ति और प्रेम, रीतिकाल में शृंगार व कलाबोध, और आधुनिक काल में नवचेतना एवं बदलाव।

सिद्ध साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, नाथ साहित्य, लौकिक साहित्य

सिद्ध साहित्य

सिद्ध साहित्य बौद्ध धर्म के महायान और वज्रयान मार्ग के अनुयायियों द्वारा रचित है। इसमें सरहपा, शबरपा, लुइपा आदि सिद्धों की रचनाएँ मिलती हैं, जो भक्ति, योग, तंत्र, साधना, आत्मा-परमात्मा की एकता जैसे विषयों पर केंद्रित हैं। भाषा अपभ्रंश, शैली सरल एवं व्यावहारिक। रचनाओं में सांसारिक माया, मुक्ति, वैराग्य की बातें प्रमुख।

जैन साहित्य

जैन साहित्य में जैन तीर्थंकरों, साधुओं, आचार्यों द्वारा नीति, धर्म, मोक्ष, साधना पर केंद्रित रचनाएँ हैं। भाषा- प्राकृत, अपभ्रंश। मुख्य ग्रंथ- उपदेश, कथा, गाथा, नीति-शास्त्र। लौकिक विषयों के साथ धर्मशास्त्र की महत्ता।

रासो साहित्य

रासो साहित्य आदिकाल का वीरगाथा काव्य, जिसमें 'रस' का तात्पर्य वीरता और महाकाव्यगत भाव हैं। प्रमुख पद्य ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' (चंदबरदाई) के अतिरिक्त 'हम्मीर रासो', 'परमार रासो', 'कुमारपाल रासो' आदि। इन रचनाओं में ऐतिहासिक घटनाओं का काव्यात्मक वर्णन, लोकचित्त, नई राष्ट्रीय चेतना।

नाथ साहित्य

File Provided by GKPAD.COM

नाथ साहित्य नाथ संप्रदाय के योगी कवियों, जैसे गोरखनाथ, मस्तनाथ, चौरंगीनाथ आदि द्वारा रचित है। विषय- योग, साधना, गुरु-शिष्य संबंध, तर्क, परावैज्ञानिक अनुभव। भाषा ब्रज, विभिन्न अपभ्रंश, लोकभाषाएँ। नाथ कवियों ने गुरु की महत्ता, ध्यान-समाधि, हठयोग, तत्त्वज्ञान को प्रमुख स्थान दिया।

लौकिक साहित्य

लौकिक साहित्य वह है जो लोक-जीवन की आवश्यकता, समस्याओं, सुख-दुख, प्रेम, विवाह, संस्कार, दैनिक जीवन के व्यवहारिक पक्षों को रचनाओं के माध्यम से उजागर करता है। इसमें रस, नीति, लोककथा, सामाजिक अनुभव, संस्कार आदि का समावेश है, जो बाद के कालों में हिंदी साहित्य की नींव बने।

भक्ति आंदोलन के उदय के सामाजिक और सांस्कृतिक कारण

भक्ति आंदोलन भारतीय समाज के मध्यकालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक रगों की गहराई में विकसित हुआ। 13वीं से 17वीं शताब्दी में जब देश में मुस्लिम शासन, सामाजिक असमानता, जातिवाद, कर्मकांड और धार्मिक आडंबर फैल गया था, तब समाज में मानवता, प्रेम, समानता, व्यक्तिगत मुक्ति, भाईचारे की आवश्यकता महसूस हुई। संत-भक्त कवियों ने जाति, धर्म, संप्रदाय, आडंबर, बाह्य पूजा के विरोध में निर्गुण-सगुण भक्ति का संदेश फैलाया। भक्ति आंदोलन का प्रयोगवादी स्वरूप सामाजिक अन्याय, रूढ़ि, दिखावा और जातिपंथ, संचय, भौतिकवाद के विरोध में खड़ा हुआ।

भक्ति आंदोलन ने समाज में परिवर्तन, बौद्धिक जागृति, किसान, शिल्पी, मजदूर, साधारण जन तक धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना का प्रवाह किया। मानव-एकता, प्रेम, समभाव, अगाध श्रद्धा, लौकिक जीवन के साथ transcendentalism की नई दृष्टि। भक्ति काव्य लोकभाषा का प्रयोग कर सामाजिक चेतना फैलाने का माध्यम बना।

भक्ति काल के प्रमुख संप्रदाय और उनका वैचारिक आधार

भक्तिकाल में दो प्रमुख संप्रदाय स्थापित हुए—

सगुण संप्रदाय

File Provided by GKPAD.COM

सगुण संप्रदाय में ईश्वर को साकार रूप में माना गया है। राम, कृष्ण आदि के प्रति प्रेम, भक्ति और समर्पण। सूर, तुलसी, मीरा जैसे भक्त कवि। काव्य में लीला, प्रेम, श्रृंगार, सौंदर्य, भावनात्मक लगाव। प्रमुख प्रवृत्तियाँ— लीला काव्य, वियोग श्रृंगार, सख्य भाव, बाल-रूप की आराधना।

निर्गुण संप्रदाय

निर्गुण संप्रदाय के कवि ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापी, अगोचर मानते हैं। कबीर, रैदास, दादू, नानक आदि ने बाह्य पूजा, कर्मकांड, मूर्तिपूजा का विरोध कर आत्मा-परमात्मा के एकात्म भाव, Equality, सर्वधर्म समभाव पर बल दिया। विचारशीलता, तर्क, साधना, सहजता, लोक अनुभव इनकी कविता की विशेषता है।

वैचारिक आधार

इन संप्रदायों का वैचारिक आधार अंतर्मुखी साधना, व्यक्तिगत अनुभूति, प्रेम, समता, राग-द्वेष रहित जीवन है। समाज में आडंबर, जातिवाद, अमानवीयता, पाखंड का विरोध, जीवन की सहजता और आत्मिक शांति इनकी अभिव्यक्ति के मुख्य विषय हैं।

निर्गुण एवं सगुण कवि और उनका काव्य

निर्गुण कवियों में कबीर, रैदास, दादू, नानक, परमार जैसे संत कवि प्रसिद्ध हैं। इनके काव्य में सहज बोध, तर्क, अनुभव, गंभीरता, सामाजिक अन्याय के विरोध, मानवता व समता की पुकार प्रमुख है। कबीर के दोहे—'माँझी नाव जिन्हें बहाइ', रैदास के 'बेगमपुरा' जैसे पद खूब चर्चित हैं। निर्गुण भक्ति साधना का प्रमुख माध्यम है, जो आत्मा की मुक्ति, बंधनों से आजादी, पूर्णता की तलाश को रेखांकित करती है।

सगुण कवियों में तुलसीदास, सूरदास, मीरा, जयदेव, विट्ठलनाथ आदि का नाम लिया जाता है। इनकी कविता में भगवान के साकार स्वरूप का प्यार, कथा, सौंदर्य, प्रेम, लीलाओं का संक्षिप्त और लंबा वर्णन मिलता है। सूरदास के भ्रमरगीत, तुलसी के मानस, मीरा के भजन, भावों की गहराई, भाषा की मिठास, शैली की सरलता, प्रतीकात्मकता चित्रित हैं। सगुण कविता में बाल-संघ, राधा-कृष्ण की लीलाएँ, भक्ति, श्रृंगार, दृष्टिपात की परंपरा है।

रीतिकाल की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, नामकरण व प्रवृत्तियाँ

File Provided by GKPAD.COM

रीतिकाल भारतीय इतिहास का 17वीं-19वीं शताब्दी का दौर है, जिसमें मुगल शासन, दरबारी संस्कृति, विलासी जीवन, रूप-सौंदर्य, कल्याण, श्रृंगार की प्रधानता एवं काव्यशास्त्र का औपचारिक अनुकरण दिखता है। समाज में सम्पन्नता, दरबारी जीवन, कवियों का दरबारों में स्थान, काव्य का श्रृंगारिक, कलावादी रूप प्रमुखता से बढ़ा। इसी युग में साहित्य का नामकरण रीतिकाल हुआ। 'रीति' का अर्थ है काव्य का नियम, शास्त्रीय अनुकरण। प्रवृत्तियों में इंद्रधनुषी कल्पना, रूप-सौंदर्य, अलंकार, नायिका भेद, काव्य शास्त्र की उपमा, सामाजिक शान-शौकत, प्रेम व विलासिता।

रीतिकालीन साहित्य के प्रमुख भेद (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीति मुक्त), प्रमुख कवि और काव्य

रीतिबद्ध

रीति नियमानुसार रचनाएँ— केशव, चिंतामणि जैसे कवि। भाषा, शिल्प, अलंकार, आदि का कठोर अनुकरण; रास, रूप सौंदर्य, नायिका भेद, अलंकार प्रमुख।

रीतिसिद्ध

नियत नियमों का पालन करते हुए व्यक्तिगत अनुभव व भाव प्रधानता— घनानंद, देव, बदरीनाथ आदि। प्रेम का दर्द, विरह, कल्पना, अलंकार का एकात्म रूप।

रीति मुक्त

नियमों से मुक्त, स्वतःस्फूर्त, नवाचार, विशुद्ध भाव— बिहारी, भूषण, बुद्धिप्रकाश आदि। सहजता, भावप्रधानता, ठोस यथार्थवाद, व्यक्तिगत अभिव्यक्ति।

प्रमुख कवि और काव्य

केशवदास—कविता प्रिय, बिहारी—सतसई, घनानंद—सुजानहित, देव—भवानी विलास, चिंतामणि—रसरत्नाकर। इन काव्यों में प्रेम, श्रृंगार, भाषा का चमत्कार, कल्पना, अलंकार, बिंबों की विविधता। बिहारी के दोहे-विरह, प्रेम, नीति व अनुभव। केशव के राजा व प्रिया सम्बंधी काव्य, घनानंद के विरहपूर्ण पद।

इकाई 2: आधुनिक कालीन काव्य का इतिहास

File Provided by GKPAD.COM

आधुनिक कालीन काव्य का इतिहास

आधुनिक कालीन हिन्दी कविता की नींव उन्नीसवीं शताब्दी में पड़ी, जब भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, और साहित्यिक चेतना के नए युग का आरंभ हुआ। इस युग में पद्य के साथ-साथ गद्य, समालोचना, कहानी, नाटक, निबंध, उपन्यास, पत्रकारिता आदि विधाओं का तीव्र विकास हुआ। ब्रिटिश शासन के आगमन, पश्चिमी सभ्यता, औद्योगिकीकरण, मुद्रण कला, शिक्षा और संचार माध्यम के प्रसार ने हिंदी साहित्य को नई चेतना और दिशा दी। इस काल की सबसे बड़ी उपलब्धि भारतीय जन-मानस को जाग्रत करना और राष्ट्रीयता, समाज सुधार, यथार्थवाद, स्वतंत्र विचार, वैज्ञानिक सोच, और प्रगति का संदेश फैलाना था।

ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग प्रगतिशील चेतना का संकेत बना। गद्य की प्रधानता, विषयों की बहुलता, भावनाओं की विविधता, विचारों की व्यापकता और शैली की स्वतंत्रता इस काल की मुख्य पहचान है। आधुनिक हिंदी कविता ने न केवल भावनाओं को विस्तार दिया बल्कि जीवन के यथार्थ, जिजीविषा, संघर्ष, समाज, राजनीति, अर्थ, विज्ञान, जीवन-मूल्य, शोषण, मानवता, प्रेम, विद्रोह, व्यंग्य आदि विषयों को भी केंद्र में रखा।

सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, नामकरण व प्रवृत्तियाँ

आधुनिक काल की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि औपनिवेशिक भारत, स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक, राजनैतिक आंदोलन, नवजागरण, राष्ट्रीय चेतना, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, धार्मिक एवं जातिगत सुधार आंदोलनों से जुड़ी रही। पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव, प्राचीन सामाजिक संरचना का विघटन, समानता, मानव अधिकार, विज्ञान, शिक्षा, लोकतांत्रिक मूल्यों, जन-संचार, मुद्रण कला का अविष्कार—इन सबने नई पीढ़ी को एक संकल्पबद्ध दृष्टि दी।

इस काल को सामान्य रूप से चार प्रमुख धाराओं में वर्गीकृत किया जाता है: नवजागरण काल (भारतेन्दु युग), सुधार काल (द्विवेदी युग), छायावाद, और छायावादोत्तर विचारधाराएँ (प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता और समकालीन कविता)। नामकरण उस युग के प्रमुख साहित्यकार, विचारधारा, विषय, और भावनात्मक दिशा से लिया गया है, जैसे भारतेन्दु युग

File Provided by GKPAD.COM

(भारतेन्दु हरिश्चंद्र), द्विवेदी युग (महावीर प्रसाद द्विवेदी), छायावाद (भावबोध, कल्पना), प्रगतिवाद (मार्क्सवादी सामाजिक चिंता), प्रयोगवाद (नवाचार, तर्क), नई कविता (समसामयिक जीवनानुभूति)।

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण

1857 की क्रांति ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना का जन्म दिया। ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध पूरे देश में विद्रोह फैला, जिसका प्रभाव संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, संगीत, रंगमंच आदि हर क्षेत्र में पड़ा। स्वतंत्रता संग्राम के महानायक, लोक कवि, गीतों, गज़लों, भजनों के माध्यम से लोकमानस में स्वतंत्रता की व्याकुलता, आत्मसम्मान, वीरता और सामाजिक चेतना का प्रसार हुआ।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण का तात्पर्य है भारत की सोई हुई संस्कृति, कलाएँ, शिक्षा, संगीत, साहित्य को पुनः जाग्रत करना। आर्य समाज, ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन जैसे आंदोलनों ने धर्म और समाज को सुधारने का कार्य किया। इस पुनर्जागरण ने साहित्यकारों को समाज सुधार, शिक्षा, नारी उत्थान, सामाजिक समता, राष्ट्रीय भावनाओं, प्रेम, करुणा, त्याग, परंपरा और आधुनिकता को जोड़ने की प्रेरणा दी।

हिन्दी नवजागरण, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद की प्रवृत्तियाँ

1. हिन्दी नवजागरण

नवजागरण काल (भारतेन्दु युग, 1850-1900) में पहली बार कविता का संबंध आम जन-जीवन, समाज, देश की समस्याओं से हुआ। ब्रजभाषा का स्थान हिंदी ने लेना आरंभ किया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र को नवजागरण का अग्रदूत कहा गया। देशभक्ति, समाज सुधार, नारी शिक्षा, राजनीति, राष्ट्रभाषा, हिंदू संस्कृति, भारतीयता की व्याख्या इनके काव्य में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

File Provided by GKPAD.COM

उदाहरण: 'भारत दुर्दशा', 'मातृभाषा प्रेम', 'हिंदोस्तान' आदि। भारतेन्दु के साथ-साथ प्रताप नारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', राधाचरण गोस्वामी, अम्बिका दत्त व्यास प्रमुख साहित्यकार रहे।

2. द्विवेदी युग

द्विवेदी युग (1900-1920) की प्रधानता भाषा शुद्धता, विषय-वृद्धि, सामाजिक चेतना, राष्ट्रीयता, तर्क, वैज्ञानिकता पर थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य को धर्म, नैतिकता, सामाजिकता, शिक्षा, विज्ञान, देशभक्ति, समाज कल्याण के साथ जोड़ा। छायावाद की आहट इसी समय शुरू हुई। प्रमुख प्रवृत्तियाँ: तर्क और विश्लेषण, भाषा शुद्धता, नैतिक दृष्टिकोण।

3. छायावाद

छायावाद (1920-1936) हिंदी कविता में रोमांटिसिज्म, भावप्रवणता, कल्पना, प्रकृति प्रेम, आत्मचेतना का युग है। जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा को इस युग के स्तंभ कवि माना जाता है। भाव, शैली, छंद, अलंकार, भाषा, नैतिकता में नयापन और गहराई को स्थान मिला। काव्य में कटु आलोचना के बावजूद छायावादी युग को हिंदी कविता की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि माना जाता है।

छायावादोत्तर विचारधाराएँ: प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता

1. प्रगतिवाद (1936-1953)

प्रगतिवाद का आरंभ 'प्रगतिशील लेखक संघ' के गठन (1936) से माना जाता है। विश्व-युद्ध, आर्थिक मंदी, श्रमिक आंदोलन, किसान संघर्ष, वर्ग-संघर्ष, मार्क्सवादी विचार, समाजवादी चेतना का प्रभाव कविता पर पड़ा। नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन जैसे कवियों ने शोषित-वंचित वर्ग की पीड़ा, संघर्ष, समाजवाद, क्रांति, बदलाव का स्वर प्रस्तुत किया। भाषा खड़ी बोली, भाव—जिजीविषा, विद्रोह, यथार्थ, प्रतीक, तर्क, समाज का परिवर्तन।

2. प्रयोगवाद व नई कविता (1953-अब तक)

File Provided by GKPAD.COM

'तार सप्तक' (1943) के प्रकाशन के साथ हिंदी कविता में प्रयोगवादी युग और नई कविता का आरंभ हुआ। अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, भारतभूषण अग्रवाल, बिहारी लाल हरित, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, कुंवर नारायण, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, केदारनाथ सिंह, जगदीश गुप्त आदि कवियों के काव्य में व्यक्तिगत अनुभव, छंदहीनता, गहन प्रतीक, सामाजिक चिंतन, नए भाव, विरोध, अंतर्द्वंद्व, व्यंग्य, आत्मिक खोज, और सूक्ष्म संवेदना का चित्रण हुआ। भाषा में नवीनता, विचार में गहराई, शैली में विविधता दिखाई देती है।

3. समकालीन कविता

1953 के बाद की कविता को समकालीन कविता कहा जाता है। इसमें समाज की जटिलता, राजनीति, निराशा, व्यक्तिगत कुंठा, वैयक्तिकता, प्रयोग, गहन अनुभूति, आक्रोश, असंतोष, विसंगति, यथार्थवाद जैसे विषयों पर कविता रची गई। समकालीन कविता में स्वतंत्रता के बाद का समाज, सत्ता, राजनीति, अंतर्विरोध, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, वैश्वीकरण, विस्थापन, नए मिथक, नई भावनाएँ, संघर्ष, संकट के भाव हैं।

प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ एवं साहित्यिक विशेषताएँ

नवजागरण व भारतेन्दु युग

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र: भारत दुर्दशा, सत्य हरिश्चंद्र, नाटक, भजनों के माध्यम से नवजागरण का स्वर।
- प्रताप नारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', राधाचरण गोस्वामी, अम्बिका दत्त व्यास: राष्ट्रवाद, नारी शिक्षा, संस्कृति, सामाजिक सुधार की प्रवृत्ति।
- दृष्टि: ब्रज से सदस्य खड़ी बोली की ओर।
- गुण: देशभक्ति, सामाजिक सुधार, तर्क, नई विचारधारा, ठोस भाषा व शिल्प।

द्विवेदी युग

File Provided by GKPAD.COM

- महावीर प्रसाद द्विवेदी: भाषा की शुद्धता, साहित्य का लक्ष्य समाजोत्थान और शिक्षा; धर्म, नीति, विवेक।
- अन्य प्रमुख: मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन।
- गुण: नैतिकता, देशप्रेम, सरलता, तर्क, सामाजिक चेतना।

छायावादी युग

- जयशंकर प्रसाद: कामायनी, आँसू, झरना, लहर।
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': अनामिका, वनवेला, गीतिका।
- सुमित्रानंदन पंत: युगवाणी, पल्लव, चिदंबरा।
- महादेवी वर्मा: निहार, रश्मि, दीपशिखा।
- गुण: भावुकता, संवेदनशीलता, प्रकृति प्रेम, आत्मचेतना, कल्पना, शैली की कोमलता।

प्रगतिवाद व प्रयोगवाद

- नागार्जुन: युगधर्मी कविता, वस्तुनिष्ठ, ग्राम्य अनुभव, श्रमिक चेतना।
- केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती: समाज-संस्कृति, आक्रोश, विद्रोह, नवाचार, वर्ग संघर्ष।
- गुण: तर्क, यथार्थ, विद्रोह, समाजवाद, प्रतीक, छांदसिक परिवर्तन, व्यंग्य।

समकालीन कविता

- अज्ञेय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय, कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह: व्यक्तिगत कुंठा, सामाजिक विच्छिन्नता, ज्ञान, विसंगति, कला, प्रयोग।
- धर्मवीर भारती, धूमिल, अरुण कमल, राजेश जोशी, अशोक जमवाल: राजनीति, बाजार, उपभोक्तावाद, निराशा, संघर्ष।
- गुण: अनुभव संबद्धता, आधुनिकता, अंतरद्वंद्व, चुनौतियाँ, प्रयोग, सामाजिक यथार्थ।

File Provided by GKPAD.COM

आधुनिक हिंदी पद्य का इतिहास इस प्रकार भारतीय समाज, संस्कृति, राजनीति, साहित्य के संश्लेषण का साक्ष्य है। इसमें कालानुसार प्रवृत्तियों, विषयों, भावनों, विचारों, शैली और भाषा में विविधता दिखाई देती है। आधुनिक कविता ने भारत के सामाजिक-राजनैतिक इतिहास में विचार, संवेदना, विमर्श, आलोचना, परिवर्तन और प्रयोग की व्यापकता स्थापित की है।

इकाई 3: आदिकालीन कवि एवं काव्य

विद्यापति पदावली: गंगा वंदना, श्रीकृष्ण प्रेम, राधा प्रेम

विद्यापति की पदावली हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है, जिसमें श्रृंगार, भक्ति और माधुर्य की अनुपम छटा व्याप्त है। विद्यापति मैथिली और संस्कृत के महान कवि थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं में राधा-कृष्ण के लौकिक प्रेम को अत्यंत सुंदरता से प्रस्तुत किया। उनकी प्रमुख रचनाओं में गंगा वंदना, श्रीकृष्ण प्रेम एवं राधा प्रेम विशेष रूप से अद्भुत बन पड़ी हैं।

गंगा वंदना

गंगा वंदना में विद्यापति ने मां गंगा की महिमा, शुद्धता, ताजगी और पवित्रता का गुणगान किया है। गंगा का जल हिंदू संस्कृति में न केवल एक पवित्र नदी के रूप में, बल्कि मुक्ति व जीवन के प्रतीक के रूप में माँगा जाता है। विद्यापति ने गंगा को जीवनदायिनी, व्यथा हरण करने वाली, कल्याणकारी और मोक्षदायिनी के रूप में अपनी वंदनाओं में चित्रित किया। उनके काव्य में गंगा का पवित्र जल जीवन की कठोरता और अशुद्धता को दूर करता है। गंगा को कवि ने शास्त्र, पुराण, लोक जीवन, सामाजिक सरोकारों के साथ जोड़ते हुए, 'सात मुक्तियों' (सप्तसिन्धु) के आधार पर समाज की सांस्कृतिक मूलधारा बना दिया है।

श्रीकृष्ण प्रेम

विद्यापति की कविता में श्रीकृष्ण केवल एक ईश्वर ही नहीं, बल्कि प्रेम, सौंदर्य और मानवीय भावना के चरम प्रतिमान बन जाते हैं। उनकी रचनाएँ 'वंशी माधुरी', 'श्रीकृष्ण पदावली' आदि में कृष्ण अपने अलग-अलग रूपों — बाल स्वरूप, रासलीला, वियोग, मिलन, संकोच तथा उत्साह के साथ दिखाई देते हैं। विद्यापति ने श्रीकृष्ण के मनोभावों को, उनके मन की पीड़ा,

File Provided by GKPAD.COM

उनकी व्यथा, विरह, राधा से मिलने की आतुरता, उत्सुकता के साथ चित्रित किया। कृष्ण की बाँसुरी की मधुर तान, गूँजता स्वर, उनका रूप, उनकी लीला—सभी विद्यापति की कविता में गहराई और सजीवता से प्रकट होते हैं।

राधा प्रेम

विद्यापति ने राधा के सौंदर्य, उसके प्रेम, उसकी पीड़ा, मिलन और विरह को अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। उनकी कविता में राधा—एक सामर्थ्यवान, स्वतंत्र इच्छा एवं प्रेममयी नायिका—अपने हृदय के भाव अपनी सहेली के माध्यम से कहलवाती है। राधा का प्रेम निश्छल, उन्मुक्त एवं संपूर्ण समर्पण का प्रेम है, जिसमें विरह और मिलन दोनों की पीड़ा और आह्लाद झलकता है। विद्यापति की भाषा में गेयता, भावप्रवणता, माधुर्य, रूपक-प्रतीक, अलंकारिकता के कारण राधा-कृष्ण का प्रेम यथार्थ एवं कालजयी बन जाता है।

गोरखनाथ की गोरखबानी: चुनिंदा सबदी एवं पद

गोरखनाथ ने गोरखबानी में 'सबदी' तथा 'पद' छंद का प्रयोग किया, जिसमें गूढ़ दर्शन, योग, गुरु भक्ति, मानव जीवन की सच्चाई एवं सामाजिक आलोचना समाहित है। गोरखनाथ की भाषा गहन, चिंतनशील, सहज, किंतु प्रतीकात्मक है—जिसमें प्रवचन, रहस्यवाद तथा योग का सुंदर समन्वय मिलता है।

सबदी (शब्द / सुभाषित)

सबदी वे छोटे छंद हैं, जो गुरु–शिष्य संबंध, विरक्ति, साधना, जीवन के उद्देश्य, आत्मा की मुक्ति, शास्त्र व बाह्याचार की सीमाओं का गूढ़ विवेचन करते हैं।

- गोरखनाथ ने इनमें बाह्य धर्माचार, कर्मकांड, सामाजिक आडंबर, गेरुआ वस्त्र, तीर्थ यात्रा, कर्मकांड, जातिवाद आदि की आलोचना की।
- सबदी का एक उदाहरण— 'क़ाज़ी, मुल्ला, नमाज़ी, क़ुरान से बँधे रहे/ ब्राह्मण बँधे रहे पोथी वेद-पुराण में/ गेरुआ पहनकर काँवड़िए संन्यासी भटकते रहे..."। इसमें मानव

File Provided by GKPAD.COM

जीवन का सत्यान्वेषण—सत्य, मुक्ति, ब्रह्म, आत्मा—बाहरी साधनों से नहीं, आंतरिक साधना, गुरु के उपदेश, जीवनदर्शन, निरपेक्षता से संभव बताया गया है।

पद

गोरखनाथ के पदों में लोक भाषा, योग, जीवन संघर्षों की यथार्थता, मानवीयता, गुरु महिमा, संयम-नियम की महत्ता, साधना के रहस्य भाव से प्रस्तुत हैं। वे कहते हैं कि आत्मा को पाने के लिए सच्चा साधक वही है, जो आडंबर त्यागकर प्रमाणिक जीवन और साधना करता है।

अमीर खुसरो: व्यक्तित्व व कृतित्व, कव्वाली, गीत, दोहे

अमीर खुसरो भारतीय साहित्य और संगीत के अनमोल रत्न रहे हैं। उनका वास्तविक नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो था। भारत में दिल्ली सल्तनत के प्रसंग में खुसरो का कृतित्व अद्वितीय है। खुसरो न केवल एक महान कवि थे, बल्कि उत्कृष्ठ गायक, संगीतकार, नवप्रवर्तक एवं सांस्कृतिक व्यक्तित्व थे। उनका जीवन धर्म-संस्कृति, समाज और राजनीति के समन्वय की मिसाल है।

व्यक्तित्व

खुसरो 'तूती-ए-हिन्द' (भारत का तोता) के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे फारसी, अरबी, तुर्की एवं हिंदी, ब्रज, खड़ी बोली, अवधी, पंजाबी पर समान अधिकार रखते थे। उनकी साहित्यिक छवि 'गंगा-जमुनी तहज़ीब', सांस्कृतिक सहिष्णुता, सूफी तत्त्व और हिन्दू-मुस्लिम समन्वय के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध रही। खुसरो ने अपने जीवन का बड़ा भाग सुल्तानों के दरबार में और आध्यात्मिक गुरु निज़ामुद्दीन औलिया की सेवा में बिताया।

कृतित्व

खुसरो की रचनाएँ फारसी और हिंदी में समान रूप से लिखी गईं। उनकी पहेलियां, मुकरी, दो सुखने, गीत, दोहे, खालिकबारी प्रसिद्ध हैं। उन्होंने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को नई ऊँचाई दी, खयाल, तराना, क़व्वाली आदि का प्रवर्तक माना जाता है। उनकी कव्वालियों में प्रेम,

File Provided by GKPAD.COM

भक्ति, सद्भाव, संगीत, समाज और समन्वय का रंग है। 'छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाइके", 'आज रंग है री मां" जैसे गीत आज भी लोकप्रिय हैं।

दोहे, गीत और अन्य रचनाएँ

खुसरो के दोहे में प्रेम और जीवन का अद्वितीय अद्भुत संगम मिलता है। उदाहरण—

- "केसों की मसनद बिछा दे, मेरे उस्ताद आया है।"
- "खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग।"

उनकी कविताओं में लोकभाषा का सहज प्रवाह, भारतीयता, सूफीवाद, प्रेम, संप्रेषण कैनवास विस्तृत है।

विद्यापति, गोरखनाथ और अमीर खुसरो, तीनों ही भारतीय संस्कृति, दर्शन, प्रेम, समाज और साहित्य के अनिवार्य स्तंभ हैं। इनकी कृतियों में मनुष्य की गरिमा, प्रेम की माधुरी, साधना की गहराई और सांस्कृतिक एकता का श्रेष्ठ संदेश मिलता है।

इकाई 4: भक्तिकालीन सगुण कवि

सूरदास: भ्रमरगीत सार (चुने हुए पद और विश्लेषण)

सूरदास के 'भ्रमरगीत सार' में करीब 400 पद हैं, जो उनकी प्रमुख कृति 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत' भाग से चयनित हैं। इस भाग में कृष्ण के मथुरा छोड़ने के बाद की गोपियों की विरह-वेदना, उनकी मनोभावनाएं, उद्धव के प्रति कटु व्यंग्य और प्रेम को अति प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसे एक निर्गुण भक्ति की आलोचना के रूप में भी देखा जा सकता है, क्योंकि सूरदास ने निर्वाणवादी चिक्ताओं से हटकर सगुण भक्ति का पक्ष लिया।

कृष्ण का ब्रज छोड़ना और गोपियों का विरह

मथुरा से श्रीकृष्ण के चले जाने पर गोपियाँ गहरे शोक में डूब जाती हैं। वे अपने प्रेमी के अभाव का संवेदनशील, मार्मिक और कभी-कभी तीखा चित्रण करती हैं। गोपियों के मन में कृष्ण के प्रति असीम प्रेम है, और वे उद्धव को संदेशवाहक मानकर कृष्ण का हाल बताने को कहती हैं।

File Provided by GKPAD.COM

किंतु उद्धव योगी और ब्रह्मज्ञान में लीन है; उसे प्रेम और यथार्थता का कोई अनुभव नहीं है। इस भेदभाव को सूरदास ने बहुत सौंदर्य और मार्मिकता से प्रस्तुत किया है।

उद्धव और गोपियों का संवाद

उद्धव योग और ब्रह्म के ज्ञान में लीन रहता है, जिसका गोपियाँ कड़ा व्यंग्य करती हैं। वे उसे 'काला भंवरा' कहती हैं, जो केवल गूंगे की तरह ब्रह्मज्ञान की बातें करता है लेकिन प्रेम की गहराई नहीं समझ पाता। यह संवाद भक्ति के दो प्रकारों—निर्गुण और सगुण—के बीच छठा प्रकट करता है। गोपियाँ कृष्ण के सखा उद्धव को प्रेम के मर्म का न समझ पाने के लिए काटती हैं।

भावात्मकता और काव्यात्मकता

सूरदास ने प्रेम, विरह, भक्ति, पीड़ा, उल्लास को निराले भावाभ्यासों के द्वारा व्यक्त किया। उनके पदों की भाषा छोटी-छोटी पंक्तियों में भी भाव की गहराई को समेटती है। उनकी कविता में प्रकृति, संगीत, भंगिमा, शैली का सुंदर संगम है। 'भ्रमर' कविता में कृष्ण की बाँसुरी की तान, विरह की वजह से उड़ता हुआ भंवरा, गोपियों की निंदा, प्रेम की तीव्र अभिव्यक्ति अद्भुत हैं।

गोस्वामी तुलसीदास: श्रीरामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड के दोहे)

गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना की, जो हिंदी साहित्य का अति महत्वपूर्ण महाकाव्य है। इसका अयोध्याकाण्ड राम के अयोध्या में राजसिंहासन के त्याग और राज्य त्याग के समय के उल्लेख को समेटता है। यह काव्य धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक, दार्शनिक और सामाजिक दृष्टि से समृद्ध है। अयोध्याकाण्ड में दशरथ और राम के भावुक संवाद, भरत का चित्रकूट प्रस्थान, वनवास की घटनाएं दिखाई गईं।

अयोध्याकाण्ड की प्रमुख वर्षों

- दशरथ के हृदयविदारक स्वप्न और अंत का वर्णन।
- राम के राज्यत्याग के निर्णय की व्याख्या।

File Provided by GKPAD.COM

- भरत के आगमन से राम के वनवास का संवाद।
- राम-भरत का वनवास एवं चित्रकूट में मिलन।
- कोवट प्रेम और भक्ति का विस्तार।
- दशरथ का निधन और भरत का वनवास में आगमन।
- भरत-भरद्वाज संवाद तथा रामसेवन का चित्रण।

शिल्प और दोहे

रामचरितमानस में चौपाई और दोहा प्रमुख रूप से प्रयुक्त हुए। तुलसीदास की भाषा सामान्य जनमानस को समझ में आने वाली अवधी भाषा है, जो सरल, मार्मिक और गूढ़ विचारों से परिपूर्ण है। दोहे में सामाजिक नैतिकता, राजधर्म, जीवन दर्शन, आदर्श चरित्रों का चित्रण है। उदाहरण के लिए:

"कबहुँ सुहाई सँवारे न काँख नहिं विरिछलि धरा।"
"राम नाम के दीप से जीवन की सारी अन्धकार मिट जाती है।"

सूरदास और तुलसीदास का काव्य विश्लेषण

भावपक्ष

सूरदास के काव्य का केन्द्रबिंदु कृष्ण की लीलाओं, बाल-लीला, राधा-कृष्ण प्रेम, भक्ति रस की अप्रतिम अभिव्यक्ति है। उनका काव्य गेय, सगुण भक्ति में रमणीय है, जहाँ भावों की गहराई और संगीतमयता अधिक है। तुलसीदास का काव्य व्यापक है, जिसमें धार्मिक, सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक, और दार्शनिक सभी रस अनेक रूपों में समाहित हैं। तुलसी की कविता में जीवन की विविध दशाएं, मानव के सुख-दुख, संघर्ष और आध्यात्म के त्याग समर्पण की महत्ता देखी जाती है।

काव्यक्षेत्र

File Provided by GKPAD.COM

सूरदास का काव्यक्षेत्र सीमित हैं, मुख्यतः कृष्ण भक्ति और श्रृंगार रस के क्षेत्रों में। तुलसीदास का काव्यक्षेत्र व्यापक है, जिसमें महाकाव्य के माध्यम से राम के आदर्श चरित्र का विस्तार है। तुलसीदास के पद्य में सभी रसों का समावेश है, जैसे श्रृंगार, वीर, करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक आदि। सूरदास की गीति-पद्धति तुलसीदास की कविताओं की तुलना में अधिक संगीतप्रिय और भावात्मक है।

काव्यशास्त्र और शैली

तुलसीदास शास्त्रज्ञ माने जाते हैं, जिन्हें भाषाशास्त्र, छंदशास्त्र, संवाद आदि का गहन ज्ञान था। उनका काव्य शिल्पात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ माना जाता है, जिसमें साहित्यिक अलंकारों का सुगम समावेश है। सूरदास सरल भाषा में गूढ़ भावों को व्यक्त करते हैं, बेहद गेय और सहज। दोनों कवि अपनी-अपनी शैली में उच्च कोटि के हैं, लेकिन तुलसीदास का काव्य अधिक विस्तृत, गंभीर, बहुआयामी और आदर्शवादी है, जबकि सूरदास का काव्य अधिक भावपूर्ण, लोकप्रिय और माधुर्य-पूरित है।

इस प्रकार, सूरदास की 'भ्रमरगीत सार' और तुलसीदास का 'अयोध्याकाण्ड' हिंदी भक्ति साहित्य के दो महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं, जो भक्तिरस की श्रेणी में अलग-अलग परंपरा और शैली दर्शाते हैं। दोनों काव्यों में भारतीय लोक और संस्कृतिक संदर्भ गहरे तौर पर झलकते हैं।

इकाई 5: भक्तिकालीन निर्गुण कवि

गुरुदेव कौ अंग: कबीरदास की साखी समूचा विश्लेषण और विस्तार

भूमिका

गुरुदेव कौ अंग कबीरदास की प्रसिद्ध साखी श्रृंखला है, जिसमें उन्होंने गुरु की महत्ता, उसके ज्ञान और आध्यात्मिक अनुभव के प्रभाव का बहुत गहन वर्णन किया है। यह संग्रह कबीर के निर्गुण भक्ति मार्ग की अद्भुत अभिव्यक्ति है, जिसमें गुरु को केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मोक्षदाता, चेतना जागृक और जीवन का सार बताया गया है। कबीर ने गुरु की कृपा के बिना मुक्ति संभव नहीं मानी, और ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु की उपासना को सर्वोच्च माना।

File Provided by GKPAD.COM

साखियों का स्वरूप और विषयवस्तु

कबीर की यह साखी व्यवस्था विशेष रूप से गुरु-शिष्य संबंध की विभिन्न अवस्थाओं को दर्शाती है। इसमें गुरु की महिमा, गुरु कृपा, गुरु के प्रति समर्पण और उसकी दी हुई शिक्षा का प्रभाव, शिष्य की स्थिति, सामाजिक व्यवहार के दोष, मानव जीवन की वास्तविकता, अज्ञानता से मुक्ति, प्रेम और भक्ति का सार उपस्थित है।

कबीर ने गुरु को सूरमा (धनुषधारी शूरवीर), ज्ञान के तीरधारी, जो शिष्य के हृदय में ज्ञान के वाण चलाता है, रूप में प्रस्तुत किया है। इन तीरों ने शिष्य के अहंकार और माया को भेदन कर आध्यात्मिक जागरूकता प्रकट कराई। यह तीर कभी प्रेम से भरे होते हैं, तो कभी कटु कर देने वाले होते हैं, पर सभी ज्ञान की गहराई में डूबे हुए हैं।

मुख्य विश्लेषण

1. गुरु का महत्व एवं गुरु शिष्य का संबंध
   कबीर कहते हैं कि संसार में सतगुरु के समान कोई नहीं, जो शिष्य के दोषों और अवगुणों को पहचानकर उसको सुधारने का काम करता हो। गुरु वह है जो शिष्य के भीतर छुपे अज्ञान, दोष और माया को उखाड़ फेंकता है। गुरु की शिक्षा कभी सौम्य और कभी कठोर होती है, पर उसका लक्ष्य शिष्य का उद्धार है। वह शिष्य का सच्चा हितैषी है, जो जन्मजात रिश्तों या जात-पात से ऊपर है।

'सतगुरु सवाँन को सगा, सोधी सई न वाता। हरिजी सवन को हितू, हरिजन सई न जाति।" इस साखी में कबीर स्पष्ट करते हैं कि गुरु जन्म से बड़ा है, न कि दलाली जाति या परिवार। गुरु का कार्य शिष्य का कल्याण करना है।

2. गुरु का रूप: सूरमा तथा शब्दबाण
   गुरु को कबीर 'सूरमा' कहते हैं, जो तीरधारी है और अपने शब्दों को शिष्य के हृदय पर जाकर लगाता है। इस शाब्दिक बाण का प्रभाव इतना गहरा होता है कि शिष्य का अहंकार टूट जाता है। यह ज्ञान की चुभन है, जो शिष्य को ज्ञानोद्घाटित कर मुक्ति के मार्ग पर साधता है। इस तीर को जब गुरु प्रेम से चलाता है तो वह बादलों की तरह शिष्य के अहंकार को धो डालता है।

File Provided by GKPAD.COM

‘सतगुरु साँचा सूरिवाँ, सबद जुँ बाह्या एक। लागत ही मैं मिल गया, पड्या कलेजै छेक।”
यहां गुरु शब्दों को तीर कहते हैं, जो अहं को छेद जाते हैं और शिष्य के हृदय को खोल देते हैं।

3. शिष्य की अवस्था: मौननिष्ठा, वाणीहीनता, इन्द्रिय निरोध
   जब गुरु ने शिष्य को ज्ञान प्रदान कर दिया, तो शिष्य की इन्द्रियाँ लौकिक रस और सांसारिक वस्तुओं से विमुख हो जाती हैं। वह गूंगा, बावला, बहरा, और पंगु जैसा हो जाता है, जिसका अर्थ है कि उसकी सारी इन्द्रियाँ आध्यात्मिक अनुभूति में लीन हो जाती हैं और बाहरी संसार से उसकी संवेगहीनता बढ़ जाती है। यहां बावलापन और गूंगापन आध्यात्मिक अनभिज्ञता या माया के आकर्षण से परे एक उच्चतम स्थिति को दर्शाता है।

‘गूंगा हुआ बावला हुआ, बहरा हुआ कान पंगुल भया।”
कबीर का यह कथन प्रतीकात्मक है कि साधक बाहरी संसार के संदर्भ में असंभव सा लगने लगता है, क्योंकि उसकी आंतरिक अनुभूति की गहराई बढ़ जाती है। लेकिन वह असमंजस और विचलित नहीं होता, बल्कि वह परम सत्य के निकट होता है।

4. ज्ञान की ज्वाला और माया से विमुखता
   कबीर कहते हैं कि गुरु के शब्द के आगनेश्वर ने शिष्य को पूरी तरह जला दिया और लौकिक माया के दीपक पर पतंग की तरह दृष्टि नहीं टिकने दी। जैसे पतंग दीपक की ज्योति की ओर आकर्षित होकर बुझ जाता है, वैसे ही शिष्य की माया अनिच्छा से बुझ जाती है। गुरु की कृपा ने इस संसार की मोह माया के बंधनों से मुक्त किया।

‘माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि इवैं पड़ंत।”
यहां कबीर ने माया को दीपक और शिष्य की दृष्टि को पतंग की तरह दर्शाया है, जो माया की ज्वाला का दुर्भाग्यपूर्ण शिकार नहीं बल्कि कुछ हद तक उससे मुक्त होता है।

5. गुरु का सफल प्रयास और शिष्य की विजय
   शिष्य दोषयुक्त होगा तब भी गुरु की शिक्षा सफल होती है। गुरु भी आसान रास्ता नहीं दिखाता, बल्कि शिष्य के दोषों की परीक्षा करता है। फिर भी गुरु की सहायता से शिष्य की आध्यात्मिक प्रगति होती है। कबीर बताते हैं कि गुरु शब्दों के माध्यम से ब्रह्मज्ञान दिलाने में सक्षम है।

File Provided by GKPAD.COM

‘सतगुर बपुरा क्या करै, जे सिपही मांहै चूक।”
इसमें यह अर्थ है कि गुरु की शिक्षा शिष्य को चाहे कितना भी दोष हो, सफल करती है।

6. प्रेम का घर और अहंकार का विनाश
   कबीर ने कई बार प्रेम और अहंकार का विरोध किया है। उनका कहना है प्रेम ही सत्य है और अहंकार उसके विनाशकारी घर है। प्रेम का घर अहंकार से मुक्त होता है, जिससे ज्ञान की ज्योति प्रवेश करती है।

‘यहु तौ घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।”
यह दर्शाता है कि गुरु के ज्ञान और प्रेम के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अहंकार को त्याग देता है।

7. स्वांग झूठे साधुओं की आलोचना
   कबीर ने अपने युग के यति, संन्यासी, साधु की भेषधारी झूठे भक्तों की खूब आलोचना की। उन्होंने कहा कि नकली और दिखावे वाले साधु न तो शिव के भक्त हैं और न ही मानव की सेवा करते हैं, बल्कि वे सिर्फ अपने भले की चिंता में लगे रहते हैं। इसीलिए उनकी साधना और भिक्षा दोनों व्यर्थ हैं।
   ‘स्वाँग जती का परी करि, घरि घरि मांगैं भीष।”
   इसमें कबीर ने समाज में प्रचलित पाखंड और दिखावे का विनोद-आलोचनात्मक चित्रण किया।

निचोड़ और सार

'गुरुदेव कौ अंग' कबीर के आध्यात्मिक और तत्त्वमीमांसीय चिंतन का निर्विवाद प्रमाण है। इसमें गुरु की महिमा, गुरु के प्रति समर्पण, गुरु की शिक्षा की महानता, शिष्य की परिवर्तनशीलता, अहंकार का नाश, प्रेम की श्रेष्ठता और समाज के झूठे पाखंडों की तीव्र आलोचना समाहित है। गुरु को सूर्य समान माना गया है, जिसकी ज्योति जीवन के तमस को दूर करती है। गुरु के वरण किए बिना सेतु पार नहीं होता। गुरु-वचन ही शिष्य के जीवन में सच्चे अर्थ और शांति का संचार करते हैं।

File Provided by GKPAD.COM

यह साखी मानव जीवन के आध्यात्मिक विकास, मानवता की समरसता, समाज के नैतिक पुनर्निर्माण, और स्व-ज्ञान की ओर एक मार्गदर्शक प्रतीत होती है। कबीर ने स्पष्ट किया कि भक्ति और ज्ञान गुरु की कृपा से ही संभव हैं, और जो गुरु की दृष्टि से अंधा रहा वह जीवित मृत समान है।

इकाई 6: रीतिकालीन कवि

रीतिकाल की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

रीतिकाल को हिंदी साहित्य का उत्तर मध्यकाल माना जाता है, जिसकी अवधि लगभग 1650 से 1857 ईस्वी के बीच मानी जाती है। यह काल मुग़ल सम्राज्य के वैभव से लेकर उसके पतन और ब्रिटिश सत्ता के उदय तक फैला हुआ है। इस युग की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अत्यंत जटिल और परिवर्तनशील थी, जिस पर साहित्य ने गहरा प्रभाव डाला एवं जिसने साहित्य को नई दिशा प्रदान की।

राजनीतिक स्थिति

इस काल में मुगल शासन के चरमोन्नति का दौर था, विशेषतः शाहजहाँ के शासन में। शाहजहाँ ने सम्राज्य को दक्षिण भारत तक फैलाया एवं अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध हुआ। शासनकाल के इस वैभव के बीच बाद में औरंगजेब के कठोर धार्मिक नीतियों के कारण उपद्रव एवं अस्थिरता पैदा हुई। बाद के मुगल शासक कमजोर पड़े और प्रांतीय शक्तियाँ बढ़ने लगीं, जिससे सामाजिक अस्थिरता और राजनीतिक तनाव दिखे। राजस्थान, अवध, बुंदेलखंड जैसे क्षेत्र विलासिता, राजनैतिक षड्यंत्रों एवं आन्तरिक कलह की मार से गुजर रहे थे।

सामाजिक स्थिति

रीतिकाल सामाजिक दृष्टि से घोर अध:पतन का काल था। सामंती व्यवस्था के कारण आम जनता की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। गरीब, किसान, श्रमिक वर्ग अत्याचार और शोषण के शिकार थे, वहीं जमींदार, अमीर और सेठ भारी संपन्न थे। चिकित्सा, शिक्षा, और सार्वजनिक व्यवस्था न के बराबर थी। भ्रष्टाचार व्याप्त था और नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ था। महिला

File Provided by GKPAD.COM

स्थिति दुःखद थी, कन्याओं का बाल विवाह, बहुविवाह, अपहरण जैसी सामाजिक बुराइयां व्यापक थीं। नारी का जीवन मात्र भोग-व्यवहार और विलासिता का माध्यम बना था।

सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि

धार्मिक रूप से इस युग में विपुल वैष्णव संप्रदायों का प्रभाव था, लेकिन मंदिरों में विख्यात विलासिता फैली थी। गुरु-पादशाहादि वर्ग में लोभ और लालच ने आध्यात्मिकता को कमजोर कर दिया था। मुसलमानों में धार्मिक पाखंड और औपचारिकता के प्रति कड़ी रूढ़ि थी, जिससे वास्तविक आध्यात्मिकता लोप हो रही थी। इस प्रकार हिंदू और मुसलमान दोनों ही अपने धर्म के मूलभूत आदर्शों से दूर होते जा रहे थे।

रीतिकाल की साहित्यिक विशेषताएँ और सांस्कृतिक प्रभाव

शैली और भाषा

रीतिकाल का साहित्य विविधता और परिष्कार की विशेषता रखता है। इस काल में भाषा मुख्यतः ब्रजभाषा (ब्रज) थी, जो गुलाबी, कोमल और अलंकारों से लैस थी। काव्यशास्त्र के नियमों का कायदे से पालन किया गया, जिसमें अलंकार, रस, छंद, और बिंब अत्यंत महत्वपूर्ण थे। यह काल श्रृंगार रस का काल माना जाता है, क्योंकि अधिकांश रचनाओं का केन्द्र बिंदु काम, प्रेम, सौंदर्य और रस का चित्रण था। नायिका भेद, नायक की विभिन्न अवस्थाएँ, प्रेम की पीड़ा, वियोग, मिलन के दर्द को काव्य में बड़े पराक्रम के साथ अनुप्राणित किया गया।

दरबारी कवि और कविताएँ

इस काल के कवि अधिकांशतः मामूली से लेकर उच्च स्तर तक दरबारों में कार्यरत थे। वे राजाओं, नवाबों, और शासकों के प्रश्रय पाकर विलासितापूर्ण, अलंकारयुक्त काव्य रचते थे। उन्हें अपनी काव्य रचनाओं में शान, बढ़ावा, वैभव और सांस्कृतिक समृद्धि की झलक दिखानी होती थी। वहाँ की नीतियाँ, राजनैतिक वातावरण, और सांस्कृतिक महत्व स्पष्ट रूप से साहित्य में परिलक्षित होते थे।

File Provided by GKPAD.COM

रीतिकाल के प्रमुख भेद

रीतिकालीन कवियों को तीन वर्गों में बाँटा गया है, जो उनके काव्य की शैली, विषय-वस्तु, और रीति के अनुपालन के आधार पर विभेदित हैं।

1. रीतिबद्ध कवि

रीतिबद्ध कवि वे हैं जो काव्यशास्त्र के नियमों, रीति ग्रंथों, अलंकार और छंदों के कड़े पालन में विश्वास रखते थे। वे काव्य की परंपरागत विधाओं में सख्ती से बंधे रहते थे। उनके काव्य में संस्कृत के प्रभाव के कारण कठिन शब्दों, अलंकारों और शास्त्रीय छंदों का प्रयोग अधिक था। इनके काव्य में सामाजिक और धार्मिक विषयों के साथ-साथ राजदरबारी गुणगान भी शामिल था।

मुख्य कवि और कृतियाँ

- केशवदास: रचनाएँ – रसिकप्रिया, कविप्रिया, रामचन्द्रिका, विज्ञानगीता
- चिंतामणि: कविकुलकल्पतरु
- मतिराम, देव, पद्माकर आदि।

इन्हें 'शास्त्रीय अनुकरण' का समर्थक माना जाता है और ये कविताओं में नायिका भेद, शृंगार रस, अलंकारों की विस्तृत श्रृंखला का आविष्कार करते हैं।

2. रीतिसिद्ध कवि

रीतिसिद्ध कवि थोड़े अधिक स्वाभाविक और सरल होते हैं लेकिन नियमों के प्रति विश्वास बनाए रखते हैं। वे रीति शास्त्रों का पालन करते हुए भी नए प्रयोग करते हैं। ये कवि अपनी कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध हुए, जिनकी कविताओं में प्रकृति, प्रेम, वीर रस और भक्ति के सुंदर मिश्रण होते हैं।

मुख्य कवि और कृतियाँ

- बिहारी (सतसई)

File Provided by GKPAD.COM

- घनानंद (सुजानहित)
- भूषण (शिवराज भूषण)
- धनानंद, पद्माकर, मतिराम आदि

रीतिसिद्ध कवि नायिका भेद के अतिरिक्त नीति, श्रृंगार, और भक्ति दोनों रसों का सुमिलन करते हैं। वे अधिक सहज और प्रभावपूर्ण भाषा का प्रयोग करते थे।

3. रीतिमुक्त कवि

रीतिमुक्त कवि वे होते हैं जो रीति शास्त्रों के बंधन से मुक्त होकर स्वतंत्र शैली और विषयों पर कविता लिखते हैं। वे शास्त्रीय नियमों का पालन नहीं करते और सामाजिक, राजनैतिक, भक्ति, और व्यक्तिगत विषयों पर मुक्त छंदों में अपने विचार प्रकट करते हैं। ये कवि अधिक यथार्थवादी और सरल भाषा का प्रयोग करते हुए प्रेम की कसक, मनोभाव और जीवन की जटिलताओं को कविता में व्यक्त करते हैं।

मुख्य कवि

- धनानंद
- बोधा
- लाल
- भूषण (कुछ कविताओं में)
- मालोनगरी में कुछ अन्य कवि भी

इन्होंने रीतिकाल की कठोर श्रृंगार परंपरा से हटकर अपने गीतात्मक और प्रयोगात्मक काव्य से हिंदी साहित्य में नयी हवा लाई।

प्रमुख रीतिकालीन कवि और उनकी रचनाएँ

केशवदास

File Provided by GKPAD.COM

रीतिकाल के प्रथम और प्रभावशाली कवि केशवदास को माना जाता है। वे ओरछा के राजा इंद्रजीत सिंह के दरबारी कवि थे। उनकी प्रमुख कृतियाँ रसिकप्रिया, कविप्रिया, विज्ञानगीता, रामचन्द्रिका, नखशिख आदि हैं। वे संस्कृत के गूढ़ शास्त्रीय ज्ञान के साथ हिंदी काव्य में अलंकारों और छंदशास्त्र की पूर्ण जानकारी रखते थे।

केशवदास के काव्य में शृंगार रस की प्रधानता रहती है और उन्होंने काव्यशास्त्र के नियमों का कड़ाई से पालन किया। वे अपने काव्य में शासकीय और सामाजिक विषयों का भी सम्मिलन करते हैं।

बिहारी लाल

बिहारी की 'सतसई' शृंगार रस की अभूतपूर्व कृति है। दोहों में उन्होंने प्रेम की सूक्ष्मता, वस्तुनिष्ठता, भाषा की सादगी और अलंकारों की जटिलता को बड़ी खूबसूरती से प्रस्तुत किया। उनका काव्य प्रेम, विरह, वियोग एवं सौंदर्य चित्रण के लिए प्रसिद्ध है।

घनानंद

घनानंद की 'सुजानहित' में नायक के मनोभाव, प्रेम की कसक और विरह के चित्रण को बहुत गहराई से अभिव्यक्त किया गया है। वे भक्ति और शृंगार रस के समन्वय में दिग्गज कवि हैं।

देव

देव 'भावविलास' और 'काव्य रसायन' के लेखक थे। उन्होंने शृंगार रस की परंपरा को आगे बढ़ाया और काव्य के छंद और अलंकार अधिक सुंदरता से प्रस्तुत किए।

मातिराम, पद्माकर, भूषण

ये कवि भी रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि हैं जिन्होंने शृंगार रस, वीर रस और नीति रस के विभिन्न रंगों को अपने काव्य में समेटा।

सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभाव

File Provided by GKPAD.COM

रीतिकालीन साहित्य को समझने के लिए उसकी सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक है। सामंती व्यवस्था का बोलबाला था जिसमें राजा, नवाब और सामंती वर्ग जीवन के केन्द्र में थे। दरबारों में विलासिता, बहुपत्नी प्रथा, राजनीतिक षड्यंत्र प्रचलित थे। सामान्य जनता को भारी आर्थिक और सामाजिक शोषण झेलना पड़ता था। नारी की स्थिति दयनीय थी जो भोग्या मात्र बन गई थी।

धार्मिक रूप से भी यह काल पतन का था। मंदिरों व धार्मिक संस्थानों में भव्यता और विलासिता अधिक हो गई थी। कर्मकांड, पूजापाठ और आडंबर फैले हुए थे। मुसलमानों के बीच भी धार्मिक रूढ़िवादिता बढ़ी। इस पतन और विलासिता के माहौल में रीतिकाल का साहित्य भी विलासी, अलंकारप्रिय श्रेष्ठ शैली का प्रतीक बना।

निष्कर्ष

रीतिकाल हिंदी साहित्य का वह काल है जिसमें काव्य की शिल्पकला ने पराकाष्ठा प्राप्त की। अपने शास्त्रीय प्रभाव, अलंकारों और भाषा की भव्यता के कारण यह युग हिंदी साहित्य की समृद्धि और विलासिता का युग माना जाता है। इसके कवि एवं काव्य शैली संस्कृत के प्रभाव का प्रदर्शन करते हैं। सामाजिक और राजनीतिक पतन, सांस्कृतिक विलासिता के बीच भी रीतिकालीन काव्य ने हिंदी भाषा और साहित्य को व्यावहारिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ में समृद्ध किया।

यह काल भले ही समाज की अधम स्थिति का युग था, किंतु साहित्य के विकास, छंद, भाषा, और अलंकार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। रीतिकालीन साहित्य आज भी हिंदी काव्य की एक विशिष्ट धारा के रूप में स्थापित है, जो भारत के सांस्कृतिक इतिहास का अभिन्न अंग है।

इकाई 7: आधुनिककालीन कवि

आधुनिककालीन कवि एवं उनका काव्य

आधुनिक हिंदी काव्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर महादेवी वर्मा तक अनेक महान कवि हुए जिन्होंने हिंदी साहित्य को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। इस इकाई में भारतेन्दु हरिश्चंद्र,

File Provided by GKPAD.COM

जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के काव्य की विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र: हिंदी साहित्य के आधुनिक युग के अग्रदूत

भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850-1885) को हिंदी साहित्य का पितामह कहा जाता है। आधुनिक हिंदी साहित्य का जो स्वर भारतेन्दु ने दिया वह सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना और भाषा के स्वरूप को नया रूप देने वाला था। उन्होंने केवल पारंपरिक विषयों पर कविता नही की बल्कि स्वतंत्रता, समाज सुधार, जाति-व्यवस्था, भ्रष्टाचार आदि विषयों को भी अपने काव्य में सामूहिक रूप से जोड़ा। उनके द्वारा हिन्दी भाषा का व्यापक प्रचार हुआ और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीव्र आलोचना की गई।

- उनकी प्रमुख कविताएँ: "नैन भरि देखौ गोकुल-चंद", "होली", "आग बुझे", "अंधेर नगरी", आदि।
- सामाजिक दृष्टि: सामंती व्यवस्था, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता पर तीखा व्यंग्य।
- भाषा: ब्रज, खड़ी बोली का संगम; सरलता व प्रभाव।
- शैली: श्रृंगार, राष्ट्रभक्ति, सामाजिक चेतना के भाव मिश्रित।

जयशंकर प्रसाद: छायावाद के प्रमुख कवि और 'कामायनी' के रचयिता

जयशंकर प्रसाद (1889–1937) छायावादी कवि थे, जिन्होंने आधुनिक हिंदी कविता को नया जीवन दिया। उनका महाकाव्य 'कामायनी' छायावाद का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें मानव मन के विविध भावनात्मक और दार्शनिक पहलुओं का वर्णन मिलता है।

- 'कामायनी' 15 सर्गों में विभाजित है, जैसे: चिंता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, लड़ाई, निर्वेद, दर्शन, आनंद आदि।
- उनके काव्य में भाव व्यक्तिवाद, जीवन की जटिलताओं की सजीव अभिव्यक्ति है।

File Provided by GKPAD.COM

- छायावाद के प्रमुख लक्षण जैसे कल्पना, संवेदना, प्रकृति प्रेम, आत्मान्वेषण उनके काव्य में दिखते हैं।

जयशंकर प्रसाद ने भारतीय दर्शन, संस्कार और आधुनिक विचारों का मिश्रण कर काव्य को दार्शनिक और मानवीय आयाम दिया।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': नवोदय और छायावाद के कवि

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1896-1961) हिंदी साहित्य के नवोदय और छायावाद के प्रमुख स्तम्भ थे। उन्होंने अपनी कविताओं में मानवीय संवेदनाओं को अंतरंग और व्यक्तिवादी रूप में प्रस्तुत किया।

- उनके प्रसिद्ध काव्यों में "सरोज स्मृति", "राम की शक्ति पूजा", "तोड़ती पत्थर" आदि शामिल हैं।
- निराला का काव्य संघर्ष, व्यथित मनोभाव और नयी भाषा तथा शैलियों के प्रयोग से भरा है।
- उनकी कविता में प्रकृति, मानव जीवन और सामाजिक विषयों के गहरे चित्रण मिलते हैं।

निराला ने हिंदी कविता को भाव की गहराई और भाषा की वैविध्यता दोनों दिये। उनके काव्य में अप्रत्याशित भावों और सामाज में व्याप्त विसंगतियों का उद्भेदन मिलता है।

सुमित्रानंदन पंत: छायावादी युग के सौंदर्य और प्रेम के कवि

सुमित्रानंदन पंत (1900-1977) छायावादी कवि थे, जिनकी कविताएं सौंदर्य, प्रेम, प्रकृति और सकारात्मकता से भरपूर हैं।

- उनकी प्रमुख कृतियाँ: "वाणी", "पल्लव", "उच्छ्वास", "मेघनाद वध", "बूढ़ा चाँद"।

File Provided by GKPAD.COM

- वे छायावाद के चार स्तम्भों में से एक माने जाते हैं और उनके काव्य में मानवता, सौंदर्य, और सकारात्मक दृष्टि का संदेश मिलता है।
- पंत की कविता की भाषा सरल किन्तु गहन, भावों में पवित्रता और व्यापकता है।

उनकी कविताएं प्रकृति के सौंदर्य और मानवीय संवेदना की प्रेरणा देती हैं, जो छायावादी युग के सौंदर्यात्मक पक्ष को दर्शाती हैं।

महादेवी वर्मा: छायावाद की प्रमुख कवयित्री

महादेवी वर्मा (1907–1987) हिंदी कविता की प्रसिद्ध कवयित्री और छायावाद की प्रमुख स्तंभ थीं। उनका काव्य वेदना, रहस्यवाद, सौंदर्य, और प्रणय भावों से ओत-प्रोत है।

- उनकी प्रमुख कृतियां: "नीरभ", "मधुशाला", "यामा", "मेरे गीत", "दीपशिखा"।
- उनका काव्य दुःख, करुणा, प्रेम और आध्यात्मिकता को सुंदरता के साथ मिला कर प्रस्तुत करता है।
- उन्होंने स्त्री विमर्श, मातृत्व, और सामाजिक विषमताओं को अपनी कविताओं में विकसित किया।

महादेवी के काव्य में व्यक्तिगत वेदना का सार्वभौमिक प्रतीक और सौंदर्य के सूक्ष्म रूपों का चित्रण मिलता है। वे हिंदी साहित्य में आधुनिक स्त्री भावना की जनक मानी जाती हैं।

आधुनिक कालीन हिंदी काव्य का सार

आधुनिक काल हिंदी साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण रहा है। इस काल ने न केवल पारंपरिक विषयों को नया संसर्ग दिया, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक समस्याओं को भी कविता में स्थान दिया। यह काल छायावाद, नवजागरण, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के संग्रह का काल है।

File Provided by GKPAD.COM

भारतेंदु ने राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक जागरूकता की नींव रखी। जयशंकर प्रसाद ने काव्य को दार्शनिक रूप दिया। सूर्यकांत त्रिपाठी ने कविता में भाव विख्यात किए। सुमित्रानंदन पंत ने सौंदर्य व प्रेम का गुणगान किया। महादेवी ने स्त्री विमर्श और वेदना के आयाम जुड़े। इन सभी कवियों ने मिलकर आधुनिक हिंदी कविता को एक नया स्वरूप एवं आयाम प्रदान किया।

इस विस्तृत परिचय में प्रत्येक कवि की जीवनियों, प्रमुख रचनाओं, काव्य के विचार, शैली, तथा सामाजिक-दार्शनिक प्रभावों का समावेश किया गया है जिसे खास कर आधुनिक हिंदी काव्य के अध्ययन के लिए आवश्यक माना गया है।## आधुनिककालीन कवि और उनका काव्य

आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख स्तंभों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, और महादेवी वर्मा को स्थान प्राप्त है। इन कवियों ने हिंदी साहित्य को सामाजिक, दार्शनिक, और सौंदर्यात्मक आयाम प्रदान किए। उनके काव्यों में भाव, शैली, विषय, भाषा की वैविध्यपूर्ण झलक मिलती है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र: आधुनिक हिंदी काव्य के पितामह

भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885) को हिंदी साहित्य के आधुनिक युग का प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने समाज की वे कुरीतियाँ, राष्ट्रीय स्वतंत्रता की आकांक्षाएँ, जातीय असमानताओं का सजीव चित्रण अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया। उनकी लोकप्रिय कविताओं जैसे "नैन भरि देखौ गोकुल-चंद", "होली", और व्यंग्यात्मक कृति 'अंधेर नगरी" में सामाजिक असमानता और आधुनिक चेतना के अंकुर दर्शाए गए। वे अंग्रेजी शासन और सामंती व्यवस्था के विरोधी थे और राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत रचनाएँ दीं। बालकों के लिए सरल भाषा और शैली का प्रयोग करते हुए उन्होंने सामाजिक सुधार का आह्वान किया।

जयशंकर प्रसाद: छायावाद का प्रतिनिधि कवि

File Provided by GKPAD.COM

जयशंकर प्रसाद (1889-1937) छायावादी कवि और लेखक थे, जिनके प्रमुख काव्य 'कामायनी' में मानव मन की गूढ़ अंतर्वृत्तियों का चित्रण हुआ है। कामायनी 15 सर्गों का महाकाव्य है जो चिंतन, श्रद्धा, कर्म आदि भावों की मनोवैज्ञानिक गहराई को अभिव्यक्त करता है। प्रसाद ने अपना काव्य आत्मचिंतन, आंतरिक संघर्ष और अध्यात्म के आरंभिक भावों के साथ रचा। उनके काव्य में छायावादी युग की कल्पना, भाव, और प्रकृति प्रेम स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने हिंदी भाषा को एक दार्शनिक और सांस्कृतिक मंच दिया।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': भावों के नवोत्कर्ष के प्रतीक

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1896-1961) ने हिंदी कविता को नए आयाम दिए। उन्होंने क्रांतिकारी भाव, संघर्ष और सामाजिक चेतना को कविता में समाहित किया। उनकी प्रसिद्ध कविताएं 'तोड़ती पत्थर", 'राम की शक्ति पूजा", 'सच है" आदि में मानवीय वेदना, संघर्ष और आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति से परिपूर्ण हैं। निराला ने हिन्दी काव्य में छायावाद की संगीतमयता और मुक्त छंदों दोनों का सफल संयोजन किया।

सुमित्रानंदन पंत: छायावाद के नाजुक और सौम्य कवि

सुमित्रानंदन पंत (1900-1977) छायावादी युग के प्रमुख कवि थे जिनकी कविताएँ सौंदर्य, प्रकृति प्रेम और मानवीय संवेदना से परिपूर्ण हैं। उनके गीत और कविताएं, जैसे "वाणी", "पल्लव", और "उच्छ्वास", में प्रकृति का भक्तिपूर्ण चित्रण मिलता है। पंत ने मानवीयता, प्रेम और सौंदर्य को सरल व सहज भाषा में व्यक्त किया। उन्हें पद्म भूषण सहित अनेक पुरस्कार मिले।

महादेवी वर्मा: वेदना और रहस्यवाद की कवयित्री

महादेवी वर्मा (1907-1987) छायावाद की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री हैं जिनकी कविताओं में वेदना, रहस्य, सौंदर्य और प्रेम का सुंदर समावेश है। उनकी प्रमुख रचनाएं 'नीरभ', 'दीपशिखा', और

File Provided by GKPAD.COM

'यामा' हैं। उन्होंने स्त्री के भीतर के मनोभावों का यथार्थ चित्रण किया और सामाजिक विषमताओं पर चिंता व्यक्त की। महादेवी के काव्य में आत्मा और प्रकृति का रोचक संवाद दिखता है। उन्होंने दर्द को काव्य की प्रेरणा मानते हुए उसे मधुर माना।

आधुनिक हिंदी कविता का समग्र स्वरूप

भारतेन्दु हरिश्चंद्र से लेकर महादेवी वर्मा तक के कवियों ने हिंदी काव्य को सामाजिक, राष्ट्रीय, दार्शनिक, और सौंदर्यात्मक आयाम प्रदान किए। इन कवियों ने न केवल पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती दी बल्कि नए विचारों, भावों, और तकनीकों का समावेश किया। इनकी कृतियाँ आज भी आधुनिक हिंदी कविता के अध्ययन और सराहना के लिए मार्गदर्शक हैं।

इकाई 8: छायावादोत्तर कविता और हिन्दी साहित्य में शोध

छायावादोत्तर कविता और उसके प्रमुख कवि

छायावादोत्तर कविता हिंदी साहित्य का वह युग है जो छायावाद के प्रभाव के पश्चात शुरू होता है। इसका उद्भव 1940 के दशक में हुआ और यह 1960 के दशक तक प्रभावशाली रहा। छायावादोत्तर कविता में छायावाद के तुलना में अधिक यथार्थवाद, सामाजिक चेतना, और व्यंग्यात्मक दृष्टि का उदय हुआ। इस काल की कविताओं में राष्ट्रवाद, प्रगतिवाद, मानवाधिकार, स्वतंत्रता संग्राम के बाद की सामाजिक-राजनीतिक समस्याएँ, शिक्षित नागरिक की चिंताएँ और व्यक्तिवाद की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।

छायावादोत्तर कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

- प्रगतिवाद: 1936 से प्रारंभ, समाजवाद और वर्ग संघर्ष पर आधारित। कवि वर्ग-दरोढ़ता, शोषण, अन्याय पर प्रहार करता है।
- राष्ट्रवादी काव्य: देशभक्ति, स्वतंत्रता संग्राम के स्वर।
- प्रयोगवाद: नवाचार और काव्यात्मक प्रयोगों पर बल।
- नई कविता: मुक्त छंद और आधुनिक विषयों का विकास।

File Provided by GKPAD.COM

प्रमुख छायावादोत्तर कविताएँ तथा उनके विश्लेषण

अज्ञेय: "नदी के द्वीप"

अज्ञेय की यह कविता गहरे प्रतीकात्मक रूप में है। इसमें नदी को समष्टि या समाज और द्वीप को व्यक्ति के रूप में दर्शाया गया है। नदी के बिना द्वीप स्थिर नहीं रह सकता, पर द्वीप अपनी सीमाओं और सीमितता को समझता है। यह कविता व्यक्ति और समाज के बीच के अंतर्संबंध और समर्पण का भाव प्रकट करती है। त्रिपाठी के शब्दों में "नदी" के माध्यम से निरंतरता, जीवन, विचार की धारा दर्शाई गई है और "द्वीप" से व्यक्तित्व की सीमितता पर प्रकाश डाला गया है।

गजानन माधव मुक्तिबोध: "विचार आते हैं"

मुक्तिबोध की यह कविता जीवन के संघर्ष, यथार्थ और असहज परिस्थितियों में मन की व्याख्या है। इसमें विचारों का अचानक उत्पन्न होना, जीवन के विभिन्न कार्यों के बीच उनका उमड़ना-घुमड़ना दिखाया गया है। कवि के अनुभवों में आम आदमी की व्यथा और चेतना की गहराई स्पष्ट होती है। कविता में दैनिक जीवन की जानकारियां, पर्यावरणीय और सामाजिक सान्दर्भिकता का सूक्ष्म चित्रण मिलता है।

नागार्जुन: "अकाल और उसके बाद"

नागार्जुन की यह कविता 1952 में प्रकाशित हुई और भीषण अकाल के बाद की स्थिति का मार्मिक विवरण प्रस्तुत करती है। अनाज के अभाव, भूख, प्यास, पशु पक्षियों की दशा, मनुष्य की पीड़ा को कवि ने चित्रित किया है। कविता में अकाल के बाद की उम्मीद, जागरूकता और पुनर्निर्माण का संदेश भी है। कवि ने सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों में अकाल की घटना को मनुष्यता के लिए एक बड़ी परीक्षा बताया।

File Provided by GKPAD.COM

धर्मवीर भारती: "बोआई का गीत"

धर्मवीर भारती की 'बोआई का गीत' आशा, प्रतीक्षा और किसान के प्रति आत्मीयता दिखाता है। कविता के माध्यम से किसान बादलों से बारिश की कामना करता है ताकि अगली फसल अच्छी हो। इस कविता में प्रकृति का संवेदनशील चित्रण, नयी पीढ़ी के उज्जवल भविष्य की कामना और उत्साह है। कविता में तत्कालीन ग्रामीण जीवन की सच्चाई और जीवन चक्र का आनंद मिलता है।

धूमिल: "मोचीराम"

धूमिल की यह कविता एक छोटा मोची, जो अपनी ज़िंदगी की कठिनाइयों में व्यथित है, उसकी मनोदशा को दर्शाती है। कविता में सामाजिक विषमता, गरीबी, मजदूर वर्ग के शोषण का मार्मिक चित्रण है। धूमिल ने सामान्य मानव की भाषा में सामाजिक विद्रोह, आलोचना और यथार्थवादी जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया। कविता विभिन्न वर्गों की जीवनशैली के विरोधाभासों को उजागर करती है।

हिंदी साहित्य में शोध का परिचय

शोध या अनुसंधान का अर्थ है ज्ञान प्राप्ति के लिए गहन, व्यवस्थित और वैज्ञानिक प्रयास। हिंदी साहित्य में शोध की प्रक्रिया साहित्य के प्रति गहन अध्ययन, विवेचना, आलोचना और नवदृष्टि प्रदान करती है।

शोध का अर्थ एवं परिभाषा

शोध का अर्थ है किसी विषय में नए तथ्य खोजने या पहले से ज्ञात तथ्यों की गहराई से जांच करना। शोध का उद्देश्य न केवल तथ्य जुटाना है, बल्कि तर्कसंगत व्याख्या कर नए सिद्धांत विकसित करना है। हिंदी साहित्य में शोध विधि रचनात्मकता, ऐतिहासिकता, सामजिक संबंध, और भाषाई विश्लेषण प्रदान करती है।

साहित्य में शोध की विधियाँ

File Provided by GKPAD.COM

- ऐतिहासिक पद्धति: साहित्यिक कृतियों के काल, परिवेश, और कारणों का निर्धारण।
- शैली विश्लेषण: भाषा, अलंकार, छंद, और रूपक के अध्ययन।
- आलोचनात्मक शोध: विषय, गुण, दोष, प्रभाव की जांच।
- तुलनात्मक शोध: विभिन्न कालों, विधाओं, और कृतियों की तुलना।
- सांस्कृतिक विमर्श: साहित्य में सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण।

साहित्य में शोध का महत्व

शोध से साहित्य की गहराई और व्यापकता का ज्ञान होता है। यह न केवल साहित्य के विकास को समझने में मदद करता है, बल्कि सामाजिक और दार्शनिक विमर्शों को भी सशक्त करता है। शोध के माध्यम से नई पीढ़ी की समझ एवं आलोचना की क्षमता विकसित होती है।

छायावादोत्तर कविता और हिंदी साहित्य में शोध दोनों ही आधुनिक हिंदी साहित्य के मूलभूत आयाम हैं। इनके माध्यम से हिंदी साहित्य में भावनाओं की गहराई, सामाजिक संघर्ष, राजनीतिक चेतना, और व्यक्तिवाद की अभिव्यक्ति होती है। इस काल के कवि समाज, प्रकृति और मानव मन की सूक्ष्मताओं को उजागर करते हुए आधुनिक हिंदी कविता को एक नयी दिशा देते हैं, वहीं शोध साहित्यिक विकास के मार्ग प्रशस्त करता है।

File Provided by GKPAD.COM